Shri Baglamukhi Panchastra Mantra

श्रीबगलामुखि पंचास्त्र मंत्र

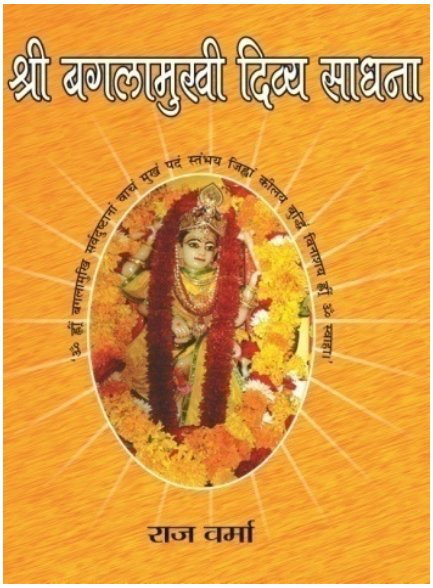

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

श्रीबगलामुखी पञ्चास्त्र

(सांख्यायनतंत्र)

भगवती बगलामुखी के पाँच अमोघ मंत्र-जिन्हें 'पञ्चबाण' या 'पञ्चास्त्र' कहा जाता है। विपरित परिस्थिति के स्तम्भन एवं संहार हेतु विधिपूर्वक इनका प्रयोग करने से परिस्थिति अनुकूल होती है। इन अस्त्रों को धैर्य एवं विधिपूर्वक सिद्ध करने वाले साधक के लिये संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। अघोरास्त्र, नारायणास्त्र व पाशुपतास्त्र के समान ये अस्त्र महाशक्तिशाली हैं। साधक को बगलागायत्री या मूलमंत्र के पर्याप्त संख्या में जप करने के पश्चात् ही इन दिव्यास्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। अर्थात एक परिपक्व साधक ही इनके जप का अधिकारी है। अस्त्रों का प्रयोग गुरु से दीक्षा एवं आज्ञा लेकर ही करना चाहिये।

प्रथमास्त्र-वडवामुखी (रणस्तम्भनास्त्र)

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीबगलामुखीरणस्तम्भनअस्त्रमंत्रस्य वसिष्ठः ऋषिः, पंक्तिश्छंदः, रणस्तम्भनकारिणी बगलामुखीदेवता, लं बीजं, ह्रीं शक्तिः, रं कीलकम्, श्रीबगलामुखी देवताप्रसादार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि। पंक्तिछंदसे नमः मुखे। रणस्तम्भिनीबालादेवतायै नमः हृदि। लं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। रं कीलकाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास व हृदयादिन्यासः-**ॐ ह्रीं - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः। बगलामुखी - तर्जनीभ्यां - स्वाहा - शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां - मध्यमाभ्यां वषट् - शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय - अनामिकाभ्यां हुं - कवचाय हुं। जिह्वां कीलय - कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् - नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा - करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् - अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्:-

पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्रभुजान्विताम्।

अर्द्धजिह्वां गदां चान्यां धारयन्तीं शिवां भजे॥

मंत्रः- **'ॐ ह्रीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्रां ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्टानां ह्रैं ह्रौं ह्रः वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ह्रः ह्रौं ह्रैं जिह्वां कीलय ह्रूं ह्रीं ह्रां बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूं ह्रीं ॐ हुं फट्।'**

प्रथमास्त्र मंत्र का पुरश्चरण बारह लाख का है। एक लाख हरताल से हवन करके ब्राह्मणों को भोजन करायें। रणस्तम्भनास्त्र के प्रभाव से अनेकों शत्रु, शत्रु की गज सेना, अश्वसेना, रथसेना तथा सामन्तों की करोड़ो सेना निष्क्रिय होकर मर जाती है तथा मृत्यु से बची सेना डर कर भाग जाती है अर्थात् महाबली शत्रु निर्बल एवं प्रभावहीन हो जाता है।

द्वितीयास्त्र-उल्कामुखी

विनियोगः- **ॐ अस्य लोकालोकस्तम्भनोल्कामुखीविद्यामंत्रस्य अग्निवाराहः ऋषिः, ककुब् छन्दः, उल्कामुखीदेवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकं, उल्कामुखीदेवताप्रसादार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **श्रीअग्निवाराहर्षये नमः शिरसि। ककुब्छन्दसे नमः मुखे। उल्कामुखीदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। ग्लौं कीलकाय नमः सर्वांगे।**

इस अस्त्र के करन्यास व हृदयादिन्यास प्रथमास्त्र के समान हैं।

ध्यानमंत्रः-

विलयानलसङ्काशां वीरवेषेण संस्थिताम् ।

वीराम्नायमहादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ॥

मंत्रः- **'ॐ ह्रीं ग्लौं बगलामुखि ॐ ह्रीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्रीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्रीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्रीं ग्लौं ह्रीं ॐ स्वाहा।'**

सिद्धि हेतु एक लाख, पुरश्चरण हेतु 14 लाख जप करें।

तृतीयास्त्र-जातवेदमुखी

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यास्त्रमंत्रस्य श्रीकालाग्निरुद्रः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीजातवेदमुखीदेवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, हं कीलकं, श्रीजातवेदमुखी देवताप्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।**

ऋष्यादिन्यासः- **श्रीकालाग्निरुद्रऋषये नमः शिरसि। पंक्तिछन्दसे नमः मुखे। श्रीजातवेदमुखीदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। हं कीलकाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास व हृदयादिन्यास पूर्ववत् हैं:-

ध्यानमंत्र:-

जातवेदमुखीं देवीं देवतां प्राणरूपिणीम् ।

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनीं विश्वरूपिणीम् ॥

मंत्र:- **'ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ स्वाहा ।'**

पुरश्चरण हेतु तीस लाख जप का विधान है। शिवजी का कथन है- विधिपूर्वक साधना करने से यह मंत्र गन्धर्व, यक्ष, गरुड़, सर्प, पन्नग, सर्प, वेताल, डाकिनी-शाकिनी, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, ऋषि, देवता तथा सिद्ध पुरुषों के समुदायों को शीघ्र स्तम्भित कर देता है।

चतुर्थास्त्र-ज्वालामुखी

विनियोग:- **ॐ अस्य श्रीज्वालामुख्यस्त्रमंत्रस्य श्रीअत्रि ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीज्वालामुखीदेवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, हं कीलकं, श्रीज्वालामुखीदेवताम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:- **श्री अत्रिऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। हं कीलकाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास व हृदयादिन्यास पूर्ववत् करें:-

ध्यानमंत्र:-

ज्वालापुञ्जसटोन्मुक्तां कालानलसमप्रभाम्।

चिन्मयीं स्तम्भिनीं देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम्॥

मंत्र:- **'ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर ज्वालामुखी (बगलामुखि) ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर-प्रस्फुर स्वाहा।'**

इसका पुरश्चरण बारह लाख का है। 'सांख्यायनतंत्र' में इसके विषय में कहा गया है कि इस ज्वालामुखी महामंत्र के प्रयोग से साधक ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश तक को स्तम्भित कर सकता है।

पञ्चमास्त्र-वृहद्भानुमुखि

विनियोगः -**ॐ अस्य श्रीबृहद्भानुमुख्यस्त्रमंत्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवृहद्भानुमुखिदेवता, ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकम्, श्रीबृहद्भानुमुखी-देवताम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **श्रीसवितार्ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीबृहद्भानुखीदेवतायै नमः हृदये। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकम् सर्वांगे।**

करन्यास व हृदयादिन्यास पूर्ववत् हैं।

ध्यानमंत्रः

कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुंजशिरोरुहाम्।

कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वांसमन्विताम्॥

स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम्।

मदिरामदसंयुक्तां बृहद्भानुमुखीं भजे॥

मंत्रः- **'ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखि ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बुद्धिं नाशय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा।'**

पुरश्चरण सिद्धि हेतु बारह लाख जप करें। इस मंत्र के प्रभाव से शत्रु बलहीन व तेजहीन हो जाता है। इस अस्त्र का जापक महान तेज व शक्तियों को धारणकर निर्भयपूर्वक चिरकाल तक समस्त सुखों का उपभोग करता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana